IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 4, Issue 1, April 2020
Impact Factor: 4.819

सैद्धान्तिक समीक्षा और आ. रामचन्द्र शुक्ल - 1

डॉ अजय कुमार बिन्द

असि. प्रो. हिंदी

राजकीय महाविद्यालय नानौता, सहारनपुर

drajaybind@gmail.com

सैद्धांतिक आलोचना साहित्य की विधा है जिसमें काव्य, नाटक या कला के मूल सिद्धांतों, नियमों और मानदंडों का निर्धारण किया जाता है। यह कृत के स्थान पर काव्यशास्त्रीय नियमों (रस, छंद,अलंकार आदि) पर ध्यान केंद्रित करती है और स्थापित सिद्धांत के आधार पर साहित्य का मूल्यांकन करती है जिसे शास्त्रीय पक्ष भी कहा जाता है। हिन्दी के आधार स्तम्भ आलोचक आ. रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना पर विचार- विमर्श करने से पहले हम सभी को कुछ तथ्यों की ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए जो समीक्षक शुक्ल के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं–आ.रामचन्द्र शुक्ल के आविर्भाव काल में भारत का स्वतन्त्रता आन्दोलन उत्कर्ष पर था और शुक्लजी उसकी गतिविधियों से निरपेक्ष नहीं थे। यह अलग बात है कि उनकी मानसिकता पर गाँधीजी से अधिक बाल गंगाधर तिलक का प्रभाव था। उनके आलोचना चिन्तन में 'गीता रहस्य' के अध्ययन का योगदान है।